धर्म ही मानव का शरण है

मानव जीवन का सार अहिंसा है । अहिंसा में ही सारे धर्म समन्वित है । अहिंसा आत्मधर्म का माध्यम है । यदि सभी धर्मों से अहिंसा को निकाल दिया जाए तो वह अहिंसा नहीं हिंसा का रूप ग्रहण कर लेंगी । अहिंसा में प्रकाश है, आत्म विकास है, जीवन का सारभूत तत्व है । अत: सभी धर्मो ने अहिंसा को सर्वोपरि माना है । धर्म ही जीवन की अंतिम चरम अभिव्यक्ति है जिससे संसार दुखों की परम्परा का नाश और श्रेयश अभ्युदय की प्राप्ति होती है । धर्म की शरण में जाने वाला संसारतीत आवागमन से विमुक्त होता है । प्राणी मात्र के यदि कोई शरण है तो वह धर्म ही है । धर्म की प्राप्ति बाह्य चकाचौंध में नही, न ही हिंसा के उपकरण रखकर बाह्य प्रदर्शन से है । आत्मचिंतन की स्वभाव वृत्ति धर्म है । विषय कषाय मिथ्यात्व के नाश किए बिना धर्म की उपलब्धि नहीं । धर्म के विषय में कुन्दकुन्दाचार्य ने कहा–

वस्यु स्वभावो धम्मो जो सो सम्मोक्ति णिहिट्ठष्णं ।
मोहक्कीण विहीणो, परिणामों अप्पणो धम्मो ।।

वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं । आत्मा का स्वभाव समता, राग–द्वेष रहित संतुलित मनोवृत्ति, मोह तथा क्रोध से विहीन समताभाव धर्म है । जो संसार के दु:खों से निकाल कर परम पद में स्थापित करता है । आचार्य समन्तभद्र ने कहा अनादिकाल से इस जीव ने संसार में बिना धर्म के परिभ्रमण किया जिसके कारण राग–द्वेष, विभाव, मोह परिणामों में लिपटा रहा है । जीव स्वत: को न पहचान, पर–परणति में लिप्त होकर जन्म मरण की क्रिया में सुख–दु:ख की जड़ता में मग्न होकर (जो विनाशक है) रच पचकर संलग्न है तथा संसार की संतति को बांधकर दु:खी हो रहा है । यह जीव स्वत: अपना धर्म, अन्याय, अत्याचार, मिथ्या, अधर्म कार्यो में लिप्त होकर शराब, मांसाहार, नशाखोरी में, जीवन व्यर्थ में गंवा रहा है । आत्म स्वभाव को आज तक न जाना न पहचाना न उसकी खोज की तत्वदृष्टि से आत्मा को कभी जानने की कोशिश भी नही की ।

वर्तमान के इस अणुबम, परमाणु बम के भयावह युग में, तथा आज के इस भौतिक वैज्ञानिक चकाचौंध में धर्म की महती आवश्यकता है । किसी कवि ने लिखा है – मनुष्य जन्म पाकर जो हम मनु की संतानें कहलाते है । बिना धर्म के शरण लिए व्यर्थ खो देना महामुर्खता है ।

'' मनुज धर्म दुर्लभ अहो, होय न दूजी वार ।
पका फल जो गिर गया, फेर न लागे डार ।। ''

वैभव, विद्या, प्रभाव आदि के घमण्ड में मस्त हुए प्राणियों ने अपने स्वतत्व को भुला दिया और अजर–अमर मान जीवन की बीती हुई स्वर्णिम घड़ियों को खो रहा है, धर्म के प्रति किंचित भी ध्यान नहीं । महाभारत का एक दृष्टांत है –

जब पांचों पाण्डव तृषित होकर एक सरोवर पर पानी पीने के लिए पहुंचे उस जलाशय के समीप निवास करने वाली दिव्य आत्माओं ने अपनी शंकाओं का उत्तर देने के पश्चात ही पीने का अनुज्ञा दी । प्रश्न यह था कि जगत में सबसे बड़ी आश्चर्यकारी बात कौनसी है ?

भीम अर्जुन भाइयों के उत्तरों से जब संतोष नहीं हुआ तब धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा –

धर्म अन्तघ्न को महान् आलोक प्रदान करता है – वे कहते हैं अरे यह आत्मा निद्रावस्था द्वारा अपने में मृत्य की आशंका को उत्पन्न करता है और जागने पर जीवन के आनंद की झलक दिखाता है । यह जीवन मरण खोज आत्मा की प्रतिदिन लीला को, कब तक इस आत्मा को शरीर में कितने काल ठहरायेगा । प्रतिदिन प्राणी इस यम मन्दिर पहुँचते रहते है और संसार में परिभ्रमण करते रहते है । अत: धर्म की शरणागत ही इस यम परंपरा को समाप्त कर सकती है ।

गौतम बुद्ध ने धर्म के विषय में कहा–

(देसेथ भिक्खवेधम्मं, आदि कल्याणं, मज्झे कल्याण, परियोसानं कल्याण, भिक्षुओं तुम आदि कल्याण – मध्यकल्याण और अन्तिम कल्याण का धर्मोपदेश दो ।

आचार्य गुणभद्र ने आत्मानुशासन में लिखा है :

धर्म सुख का कारण है, कारण अपने कार्य विनाशक नहीं हो सकता । अत: आनन्द के विनाश के भय से तुम्हें धर्म से विमुख नहीं होना चाहिए । धर्म के विषय में लॉर्ड एवरो ने लिखा है :

विश्व में शांति तथा मानव के प्रति सद्भावना का कारण धर्म है जो घृणा अत्याचार को दूर हटाकर पारलौकिक सुख को प्रदान करता है ।

वैदिक धर्म में उल्लेख है – दार्शनिक रूप में कहते हैं जिसमें सर्वांगीण उदय समृद्धि तथा मुक्ति की प्राप्ति हो वह धर्म है ।

स्वामी विवेकानन्दजी के शब्दों में – ''मनुष्यों में विद्यमान देवत्व की अभिव्यक्ति को धर्म कहते हैं ।'' दार्शनिक विद्वान भू.पू. राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने – ''सत्य तथा न्याय की उपलब्धि को एवं हिंसा के परित्याग को धर्म कहा है ।'' हिंसा कारगृह है और अहिंसा स्वच्छ जीवन को परिमार्जन कर शिवत्व पाने का लक्ष्य है ।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को प्रतिष्ठित करने वाले अनेक मत हैं, जो धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते है।

महाभारत भागवत आदि पुराणों में उल्लेख है –

धृति: क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह : ।
धी विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् ।।
धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित: ।
तस्मात्धर्मो न हन्तव्यो धनोधर्मो हतोव्यधीत ।।''

यदि धर्म की हम रक्षा करेगें, तो हमारी रक्षा होगी, और यदि धर्म को हम हनन करेंगे (मारेंगे) तो हम मरेंगे जो क्लेश संताप का कारण बनेगा । इसलिए धर्म की शरण में जाना चाहिए । उसकी अहिंसा द्वारा रक्षा करना चाहिए । धर्म के प्रति रक्षा में प्राण भी देने पड़े तो अहिंसा के बल पर देना चाहिए ।

महावीर ने कहा – क्रोध को जीतने के लिए क्षमागुण–मान को मार्दव, मायाचारी को आर्जव तथा लोभ को जीतने के लिए शौच गुण अपनाना चाहिए । त्याग, तपस्या साधना के बल पर विषय कषायों से लड़कर आत्म विजयी बनना ही धर्म है । महावीर वाणी में लिखा है –

पश्यात्मन् धर्ममहात्मम्यं, धर्मकृत्यो न शोचति ।
विश्व विश्वस्यते चित्रं, सहि लोकद्वये विजयी ।।

हे । आत्मन् तू धर्म का महात्म्य देख, धर्मात्मा कभी शोक नहीं करता और वह सबका विश्वास पात्र होता है । धर्म को अंगीकार करने वाले धर्मात्मा इस लोक और परलोक मे विजयी होकर अनन्त शक्ति को प्राप्त होते है ।

'' जो वीर दुर्जय संग्राम में लाखों युद्धों को जीतता है, यदि वह अपनी आत्मा (धर्म) को जीत ले तो उसकी सर्वोत्तम विजय है ।

श्रुयतां धर्म सर्वश्च श्रुत्वा चैवधार्यताम ।
आत्मन: प्रतिकूलानां परषां न समाचरेतू ।।

धर्म का सार है जो आत्महित के लिए हो और श्रवण कर धारण कर आत्महित कर लिया जाये, जो अपनी आत्मा को नहीं रूचिता वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति मत करो । यही धर्म का सार है ।

''यतोभ्युदयनि श्रेयसि सिद्धि : स: धर्म । '' – कणाद ऋषि

जहाँ मानव का कल्याण और सम्पूर्ण अभ्युदय हो वही धर्म है । जो कल्याण का द्योतक है ।'' आज मानव आत्म धर्म को भूलकर खाओ, पियो और मौज उड़ाओ का सिद्धांत अपना रहा है । जो अशांति का कारण है । धर्म का अर्थ है अहिंसा, मानवता, प्रेम–वात्सल्यता, सहिष्णुता, सदाचार नैतिक जीवन को अपनाकर उसकी शरण लेकर राग, द्वेष, मोह, क्षोभ को नष्ट कर सच्चा सुख प्राप्त करना । धर्म की शरण मे जाने वाला प्राणी कभी दुखी नहीं होता । वह स्वत: धर्म की शरण पा लेता है व दूसरों को शरण दिलाता है । ऐसे धर्म की एवं प्राणी की सदा जय होती है ।

– पं. बाबूलाल फणीश 'शास्त्री', पावागिरी ऊन, खरगौन

समृद्धि की राह - म्युचुअल फंड

धर्म, अध्यात्म व सामाजिक गतिविधियों के साथ अर्थशास्त्र का ज्ञान समाज के सर्वांगीण विकास के लिये जरुरी है। धन से धर्म किया जा सकता है तो क्यों न हम धन को अच्छी जगह सुरक्षित रखने की बात करें। पोस्ट ऑफिस व बैंक की बचत योजनाऐं जैसे एम.आई.एस., एफ.डी., आर.डी. आदि से सभी परिचित है। लेकिन म्युचुअल फंड की कई अच्छी योजनाऐं है। जिन्हें हम सब नहीं जानते है। समाज में लोगो की धारणा है कि ठंडा मतलब कोका कोला, म्युचुअल फंड मतलब शेअर बाजार। यह धारणा बिल्कुल गलत है। म्युचुअल फंड की कई ऐसी योजनाऐं है जो शेअर बाजार में निवेश नहीं करती है जैसे कि गोल्ड फंड, लिक्विड फंड, फिक्स मैच्योरिटी प्लान (एफएमपी), केपिटल वेंचर फंड आदि।

कहावत है कि दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है। कभी आपने यूलिप (यूनिट लिंक इंश्योरेंस प्लान) में पैसा लगाया और आपको नुकसान हुआ तो आप यह मान बैठे कि म्यूचुअल फंड खराब है। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यूलिप बीमा कंपनी की पॉलिसी है कोई म्यूचुअल फंड नहीं है। म्यूचुअल फंड को एक बार अच्छी तरह समझ लेने के बाद आपको म्यूचुअल फंड से कोई परेशानी नहीं होगी ।

म्यूचुअल फंड को ऐसे समझे – म्यूचुअल फंड आपकी सम्पत्ति का प्रबंधक है जो आपकी तरफ से आपके द्वारा चुनी गई योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्रतिभूतियों में निवेश करता है। भारत में म्यूचुअल फंड ट्रस्ट के रूप में कार्य करते है। जिन पर आप विश्वास कर निवेश कर सकते है।

लिक्विड फंड – लिक्विड फंड का आशय तरल (नकदी) फंड से है लिक्विड फंड, शार्ट टर्म मनी मार्केट इन्सट्रूमेंट जैसे काल मनी, बांड, सर्टिफिकेट ऑफ डिपाजिट, कमर्शियल पेपर आदि में निवेश करते है। जिनसे स्थिर आय प्राप्त होती है।

लिक्विड फंड की विशेषताएँ –

1) शेअर बाजार में निवेश नहीं होता है।
2) आपका निवेश कम नहीं होता है। अर्थात् नुकसान नहीं होता है।
3) कभी भी निवेश किये धन में से पैसा निकाला जा सकता है।
4) निवेश की कोई अधिकतम सीमा नहीं है।
5) कम से कम एक दो दिन के लिये भी निवेश कर सकते है।
6) निवेश करने या निकालने पर कोई शुल्क या पेनल्टी नहीं लगती है।
7) निवेश से निकासी अगले कार्यदिवस पर सीधे खाते में जमा (डायरेक्ट क्रेडिट) होता है ।
8) इस स्कीम में रिटर्न रिजर्व बैंक की रेपो रेट के लगभग मिलता है। रेपो रेट वह होती है जिसमें रिजर्व बैंक अपने अधीन बैंको को उधार देता है।

किसे उपयोगी – (शार्ट टर्म मनी पार्किंग) कम समय पैसा रखने के लिये व्यक्ति व संस्था के लिये उपयोगी। हाई इनकम टैक्स स्लेब वालों के लिये अत्यधिक उपयोगी। आकस्मिक फंड रखने के लिए उपयोगी। बैंको द्वारा अपनी वैधानिक तरलता अनुपात (एस.एल.आर.) का पैसा लिक्विड फंड में भी रखा जाता है। जो निवेशक इनकम टेक्स के 20–30 प्रतिशत आय स्लेब में आते है। उनको एफ.डी. की तुलना में लिक्विड फंड में 2–3% का सालाना आय ज्यादा टेक्स फ्री रिटर्न मिलता है। विगत एक साल में लिक्विड फंड ने 9 से 10 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। म्यूचुअल फंड की किसी भी योजना (फिक्स) निश्चित रिटर्न नहीं मिलता है।

– राजेश कुमार जैन

(लेखक – म्यूचुअल फंड इन इंडिया (एएमएफआई) द्वारा रजिस्टर्ड सलाहकार है।)

पाठको की कलम से ...

प्रथम पृष्ठ पर बेटियों के बिना भारत माँ व भ्रूण हत्या – एक माँ... में लेखिकाद्वय ने श्रेष्ठ चिंतन समाज को दिया है। इस सामायिक पहल पर लेखिकाद्वय को हार्दिक बधाईयाँ। इस अलख को, जज़्बे को, पहल को निरंतरता दे। अन्य आलेख व सामग्री पूर्ववत स्तरीय है। श्री राजकुमार जैन करैरावालों का आलेख पथ प्रदर्शक तो है पर वर्तमान परिस्थितियों में जहां हर युवक कमाऊ जीवन संगिनी चाहता है, वहीं हमारी बेटियां कहीं भी पुरुषों से कम नहीं है, उनके चिंतन रुचि, स्वभाव व पसंद को नहीं नकारा जा सकता, इन परिस्थितियों में अंर्तजातीय विवाह रुक तो नहीं सकते। बिटिया अवनी का आलेख ग्रीष्म की तपिश में राहत की अनुभूति सा है। इसी तरह होम्योपैथी की जानकारी व जल ही जीवन है भी लाभप्रद है, नया स्तंभ यूथ केलीडियोस्कोप एक अभिनव व सार्थक पहल है, जो नयी पीढ़ी को समाज से जोड़ेगी। **– इंजी. अरुणकुमार जैन,** एल.पी.भार्गव नगर, उज्जैन